CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सी ख

सिख धर्म क्या कहता है?

सं 30
वि० १२८

श्रीकृष्ण दत्त भट्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्म क्या कहता है ? : १२

सिख धर्म क्या कहता है ?

•

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

•

सर्व - सेवा - संघ - प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक : मन्त्री, सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, वाराणसी
संस्करण : प्रथम : दिसम्बर, १९६३ : ३,०००
द्वितीय : फरवरी, १९६५ : ५,०००
कुल प्रतियाँ : ८,०००
मुद्रक : नरेन्द्र भागव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी।
मूल्य : ६० पैसे

Title : SIKH DHARMA KYA KAHATA HAI ?
Author : Shrikrishna Datta Bhatta
Subject : Religion
Publisher : Secretary,
Sarva Seva Sangh,
Rajghat, Varanasi
Edition : Second
Copies : 5,000, February '65
Total Copies : 8,000
Price : 60 Paise

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशकीय

नाम जपो, किरत करो, वण्डके छको। पसीनेकी कमाई करो। मिल-बाँटकर खाओ—यह है गुरु नानकदेवका आदेश।

निष्काम भावसे कर्म करो और भगवान्की मर्जीपर अपनेको छोड़ दो। 'हुकमि रजाई चलणा'—यह है सिख धर्मका सन्देश।

गुरुभक्ति, ईश्वरनिष्ठा, श्रम, ईमानदारी और सदाचारकी बुनियादपर खड़े सिख धर्ममें प्रेम और भाईचारेपर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है। यही है वाह गुरुकी प्रसादी पानेका मार्ग।

हमारी 'धर्म क्या कहता है?'—पुस्तक-मालाकी यह बारहवीं पुस्तक है। इसके पहले वैदिक धर्म (तीन भाग), जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, ताओ, कनफ्यूश, ईसाई और इस्लाम धर्मपर भी पुस्तकें निकल चुकी हैं। सभी धर्मोंके मूलमें सत्य, प्रेम और करुणाकी एक ही त्रिवेणी बहती है। जो उसमें नहायेगा, उसका कल्याण हुए बिना न रहेगा।

हम मानते हैं कि हमारी इस पुस्तक-मालाका सर्वत्र स्वागत होगा।

•

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अ नु क्र म

१. आदिगुरु नानकदेव ५–८
२. सिखोंके दस गुरु ९–११
३. सिख धर्म १२–१५
४. जपुजी साहिबमें कहा है १६–३७

१. मूल मंत्र १७, २. जपु १७, ३. हुकमि रजाई चलणा १८, ४. साचा साहिबु साचु नाइ २१, ५. गुरा इक देहि बुझाई २२, ६. सुणिऐ दूख पापका नासु २३, ७. मंनेकी गति कही न जाइ २४, ८. पंचाका गुरु एकु धियानु २६, ९. जो तुधु भावै साई भली कार २६, १०. अन्तरगति तीरथि मलि नाउ २८, ११. बहुता करमु लिखिआ ना जाइ, ३०, १२. सो दरु केहा सो घरु केहा ३२, १३. आदेसु तिसै आदेसु ३४, १४. नानक नदरी नदरि निहाल ३६, १५. जिनी नाम धिआइया...३६।

५. श्री गुरुग्रंथ साहिबमें कहा है ... ३८–७५

१. गुरु मेरी पूजा, गुरु गोबिन्दु ३९, २. पारब्रह्म अपरंपर देवा ४१, ३. जहँ जहँ देखउँ, तहँ तहँ रामा ४३, ४. साधो इह तनु मिथिआ जानो ४५, ५. जनमु ब्रिथा जात ४७, ६. मनु मारे बिनु भगति न होइ ४९, ७. अन्तरि मैलु जे तीरथ नावै ५२, ८. बबा वैरु न करिए काहू ५३, ९. सभु सचु बरतै सचो बोलै ५५, १०. मो कउ करि संतनकी धूरे ५८, ११. दोसु न काहू दीजिये ६०, १२. हिन्दू तुरक दुहू महि एकै ६३, १३. ताके निकट बसै नरहरी ६५, १४. नामु न जपहिं ते आतमघाती ६८, १५. बिनु रघुनाथ सरनि काकी लीजै ? ७०, सन्दर्भ ७३।

●

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: १ :

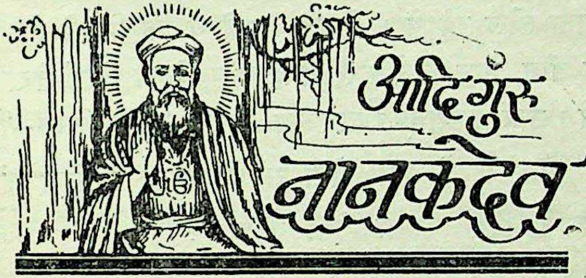

बात है आजसे कोई ५०० साल पहले की। १५ अप्रैल १४६९ को पंजाबके शेखपुरा जिलेके तलवंडीराय नामके गाँवमें एक बच्चेका जन्म हुआ।

नानाके घरमें पैदा होनेसे नाम पड़ा, नानकचन्द।

पिताका नाम था कालूचन्द, माँका तृप्ता।

नानक बचपनसे ही शान्त थे। बुद्धि तेज थी। उन्होंने हिंदी तो पढ़ी ही, फारसी और संस्कृत भी पढ़ी।

छोटी उम्रसे ही उन्हें भगवान्‌की लगन लगी। एकान्तमें बैठकर, पासके जंगलमें जाकर घण्टों सोचते रहते।

एकबार पिताने कुछ पैसे दिये, कुछ सामान खरीद लानेको। नानकने वे पैसे गरीबोंको खिलानेमें खर्च कर दिये। आकर बोले : "पिताजी, मैं सच्चा सौदा कर आया।"

आज भी वह स्थान 'सच्चा सौदा' के नामसे प्रसिद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घरवाले ठहरे दुनियादार आदमी। उन्हें यह पसन्द नहीं था कि नानक साधुओंकी संगतिमें रहे और पैसा पैदा करनेके बजाय घरकी जमा-पूँजी भूखों और गरीबोंको खिलाया करे।

पिताने एक मोदीकी दुकानपर नानकको नौकरी दिलायी। एक दिन आटा तौल रहे थे। गिनते जाते थे कि कितने सेर हुआ। एक, दो, तीन, चार करते-करते तेरहपर पहुँचे तो 'तेरा' 'तेरा' ही कहते रह गये। उन्हें भगवान्‌की याद आ गयी : 'तेरा'–'तेरा'–'तेरा' !

'मैं तेरा हूँ, सदा तेरा रहूँगा बावफा खादिम !'

कितने दिन चलती ऐसी नौकरी ?

गृहस्थीमें फँसा रहेगा तो बहकेगा नहीं, ऐसा सोचकर माँ-बापने नानककी शादी कर दी। दो बच्चे भी हो गये। पर न तो बेचारी स्त्री इन्हें बाँधे रह सकी, न बच्चे।

एक दिन नानक निकल पड़े घरसे, सब कुछ दे खुदाकी राहपर !

नानककी साधना सफल हुई। कहते हैं कि उन्हें ईश्वरके दर्शन हुए।

नानकने संन्यास ले लिया और सबसे पहला उपदेश दिया :

'न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान !'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हृदयकी गाँठ खुलने पर ऊँच और नीचका, हिन्दू और मुसलमान-का, छोटे और बड़ेका भेद रह ही कहाँ जाता है ?

कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ।
प्रभ साहबका तिनि भेदु जाता ॥

नानकने नया धर्म चलाया—सिख धर्म ।

सिख कहते हैं शिष्यको, चेलेको ।

नानकदेव मानते थे कि 'सब घट ब्रह्मनिवासा' है । सब बराबर हैं । कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं । सबसे प्रेम करो । सबकी सेवा करो । अपना आचरण पवित्र रखो । हृदयको शुद्ध बनाओ । ईश्वरका नाम जपो और अपना जीवन ऊँचा उठाओ ।

नानकका सारा जीवन धर्मका उपदेश देते हुए बीता । उन्होंने देश-विदेशका भ्रमण भी खूब किया ।

कहते हैं कि एकबार आदिगुरु मक्का गये और काबेकी तरफ पैर करके लेट गये ।

मुल्ला तो मुल्ला । ठोकर मारकर कहा : "अबे साधु, अल्लाह-की तरफ पैर करके लेटा है ?"

"तो आप मेहरबानी करके मेरे पैर उधर कर दीजिये, जिधर अल्लाह नहीं है ।"

कहते हैं कि उन लोगोंने नानकके पैर पकड़कर उन्हें घुमानेकी कोशिश की, पर वे यह देखकर हैरान रह गये कि उनके पैरोंके साथ-साथ काबा भी घूमता जा रहा है !

शर्मसे कट गये कठमुल्ले ! कबीरदासने ठीक ही कहा है :

अलहु एकु मसीति बसतु है,
अवरु मुलखु किस केरा ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नानक अंधविश्वासोंके खिलाफ थे। जात-पाँतका कोई भेद नहीं मानते थे। उनके शिष्योंमें हिन्दू भी थे, मुसलमान भी। ऊँची जाति-के लोग भी थे, नीची जातिके भी।

श्री आदिगुरुग्रंथ साहिबजीमें, सिखोंके धर्मग्रंथमें, नानककी और दूसरे गुरुओंकी वाणी तो है ही; कबीर, रैदास, सेना जैसे दूसरे भक्तोंकी भी वाणी है।

'जपुजी' नानकदेवकी सबसे अच्छी, सबसे ऊँची रचना है।

जीवनभर भगवान्‌का नामरस लोगोंको लुटाते हुए ६९ सालकी आयुमें नानकदेवने आँखें मूँदीं।

वे एक पेड़के नीचे जा बैठे। भगवान्‌के नाममें लीन हो गये। हुकुम किया : "सोहिला गाओ।"

सोहिलाके बाद जपुजीका पाठ हुआ। जब उसका अन्तिम 'सलोक' कहा गया, तो आपने चादर ओढ़ ली और चोला छोड़ दिया। उनका अंतिम शब्द था :

'वाह गुरू !'

●

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिखोंके दस गुरु

सिख धर्ममें दस गुरु हैं, जो सबके सब 'नानक' कहलाते हैं :

१. आदिगुरु नानकदेव
२. गुरु अंगद
३. गुरु अमरदास
४. गुरु रामदास
५. गुरु अर्जुनदेव
६. गुरु हरगोविंद
७. गुरु हरराय
८. गुरु हरकृष्ण
९. गुरु तेगबहादुर
१०. गुरु गोविंदसिंह

इन दसों गुरुओंने सिख धर्मको खड़ा किया है। इनकी सेवा, भक्ति, प्रेम, वीरता और बलिदानकी कहानी पंजाब ही नहीं, सारा भारत जानता है। भारत ही क्यों, सारा संसार उससे परिचित है।

इन गुरुओंके उपदेश, इनके पद ईश्वरकी भक्ति, नामजप, पवित्र जीवन और सदाचारकी भावनासे भरे हुए हैं। जो कोई पढ़ता है, गद्गद हो उठता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आइये, हम इनके पदोंकी हलकी-सी झाँकी करें :

गुरु नानक

रे मन डीगि न बोलिऐ, सीधे मारगि धाउ ।
पाछै बाघु डरावणो, आगे अगिनि तलाउ ॥ १ ॥
बाघु मरै मनु मारिऐ, जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ।
आपु पछाणै हरि मिलै, बहुड़ि न मरणा होइ ॥ २ ॥

गुरु अंगद

नानक चिंता मति करहु, चिंता तिसही हेइ ।
जल महि जंत उपाइअनु, तिना भी रोजी देइ ॥ १ ॥
जपु जपु सभु किछु मंनिऐ, अबरि कारा सभि बादि ।
नानक मंनिआ मंनिऐ, बुझीऐ गुर परसादि ॥ २ ॥

गुरु अमरदास

राम राम सभु को कहै, कहिऐ रामु न होइ ।
गुर परसादी रामु मनि बसै, ता फलु पावै कोइ ॥ १ ॥
हिरदै जिन्ह कै कपटु बसै, बाहरहु संत कहाहि ।
त्रिसना मूलि न चूकई, अंति गए पछुताहि ॥ २ ।

गुरु रामदास

सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करतास भ थाई ।
अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ १ ॥
अनदिनु सहजि रहै रंगिराता, राम नाम रिद पूजा ।
नानक गुरमुखि एकु पछाणै, अवरु न जाणै दूजा ॥ २ ॥

गुरु अर्जुनदेव

राम राम राम राम जाप ।
कलि कलेस लोभ मोह विनसि जाइ अहंताप ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपु तिआगी संत चरन लागि मन पवितु जाहि पाप ।
नानक बारिकु कछू न जानै, राखन कउ प्रभु माई बाप ।। १ ।।
पतित उधारण पारब्रहमु संम्रथ पुरखु अपारु ।
जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ।। २ ।।

गुरु तेगबहादुर

मनकी मन ही माहि रही ।
ना हरि भजे न तीरथ सेए, चोटी काल गही ।।
दारा मीत पूत रथ संपति, धन पूरन सभु मही ।
अउर सगल मिथिआ ए जानउ, भजनु रामको सही ।।
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ, मानस देह लही ।
नानक कहत मिलनकी बरिआ, सिमरत कहा नही ।। १ ।।
बिखिअन सिउ काहे रचिओ, निमिख न होहि उदास ।
कहु नानक भजु हरि मना, परै न जमकी फास ।। २ ।।

गुरु गोविन्दसिंह

रे मन ऐसो करि संन्यास ।
वन से सदन सबै करि समझहु, मन ही मांहि उदास ।।
जतकी जटा जोगको मंजनु, नेमके नखन बढ़ाओ ।
ग्यान गुरु, आतम उपदेसहु, नाम बिभूति लगाओ ।।
अल्प अहार सुल्प-सी निद्रा, दया छिमा तन प्रीत ।
सील संतोख सदा निरबाहिबो, ह्वैबो त्रिगुन अतीत ।।
काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन सौं ल्यावै ।
तब ही आत्मतत्तकों दरसै, परम पुरुष कहं पावै ।। १ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ३ :

सिख धर्म

बाबा कबीरदासने कहा है :

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो लखाय ॥

तुलसीदासजी भी कहते हैं :

राम ते अधिक राम कर दासा ।

सिख धर्मकी बुनियाद है : गुरुभक्ति । गुरुकी सेवा । गुरपरसादी । सिख मानते हैं :

गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिन्दु ।
गुरु मेरा पारब्रह्मु गुरु भगवन्तु ॥

कौन है यह गुरु ?

सवाल है कि यह गुरु है कौन ?

यह गुरु है घट-घटवासी परमेश्वर । यह गुरु है सबको प्रकाश देनेवाला, सबको सच्ची राह बतानेवाला **'गुरु गोपालु पुरखु भगवान'** । यह गुरु बाहर भी है, भीतर भी। जिस रूपमें चाहता है, दर्शन देकर शिष्यको कृतार्थ करता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह गुरु संतके रूपमें भी हो सकता है, ग्रंथके रूपमें भी। सिखोंके अंतिम गुरु गोविंदसिंहने गुरुकी परम्परा समाप्त करते हुए कहा कि आगेसे आदि श्री गुरुग्रंथ साहिबजी ही सबका गुरु रहेगा।

गुरुग्रंथके गुरु होनेका अर्थ है, गुरुकी पवित्र वाणीके अनुसार, नानकदेव और दूसरे गुरुओं तथा भक्तोंकी वाणीके अनुसार चलनेसे ही मनुष्यका कल्याण होगा। उससे लोक भी बनेगा, परलोक भी।

गुरुग्रंथकी पूजाका अर्थ है, गुरुग्रंथकी वाणीके अनुसार अपने जीवनको पवित्र साँचेमें ढालना। उसे माथेसे लगानेसे, उसपर पंखा झलनेसे ही उसका आदर नहीं होता। उसका सच्चा आदर होता है उसके अनुसार अपना जीवन सुधारनेसे। कहा है :

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित हुआ न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय॥

जरूरत है ग्रंथके भीतर भरे हुए प्रेमके इस ढाई अक्षरको पढ़नेकी।

परब्रह्म परमेश्वर

सिख धर्ममें एक ईश्वरकी उपासना की जाती है। अनन्त गुण हैं उसके। अनन्त नाम हैं उसके। यही नहीं, वह अनाम भी है।

गुरुग्रंथमें परमेश्वरके बहुत से नाम आये हैं, जैसे :

हरि, राम, प्रभु, भगवान्, बिशन, ब्रह्म, गोविंद, गोपाल, गोसांई, ईश्वर, माधो, मुरारी, पारब्रह्म।

अल्लाह, करीम, रब्ब, रहीम, राजक, साहिब।

मीतु, पिआरा, प्रीतम, वाहगुरू।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक, ओंकार, अनेक, कर्तार, खालिक, करणकारण, हुकमी, मूल, टेक, अधार, जगजीवन, प्राणदाता, प्राणपति, निर्गुण, सगुण, मालिक, परमजोत, आत्मा, सरबजोत, सर्वनिवासी, नेरे ही ते नेरे, भोगी, अभोगी, खलक, आपे आप, सोहं, तत, भुक्त, निर्लेप, निरंजन, अगम, अगाध, सत, सचु, पुरख, अकालपुरख, कमलनयन, मीर, शाहंशाह, निरंकार, अनिल, अकालमूरत, अजूनी, अविनाशी, अचल, अभेद, भरपूर, अछेद, निराकार, सैभं, अमोलक, सागर, दरिआव, आदि, अनादि, बेअंत, एकोवेश, अकाल, अदेश, सर्वव्यापी, हदूरी, अन्तर्जामी, सुखसागर, सहज, गुणतास, गुणनिधान, आनन्द, विनोदी, अमृत, दीनदयाल, अनाथनाथ, दयाल, दातार, दुखभंजन, पतितपावन, भक्त-वत्सल, बाबा, पिता, माता, कन्त, खसम, भाई, मित्र, सतिआरा, सखा, पीरु, पिआरा, निर्भय, निर्वैर, अभूल, अडोल, पवित्र, पुनीत, देव, गुरु, सदगुरु, सुन्दर, मनमोहन, सोहना, राजा, पातशाह, सच पातशाह, सर्वलोह, ठाकुर, अलेख, अकर्म, अनाम ।

नाम-स्मरण

प्रभुके अनन्त नाम हैं। इन नामोंको स्मरण करनेपर, इनका जप करनेपर सिख धर्ममें बहुत जोर दिया गया है। यहाँतक कहा गया है कि **'नाम न जपहि ते आतमघाती ।'**

पर इस नामजपका अर्थ क्या है ?

इस नामजपका, नामस्मरणका अर्थ यह है कि हम उस परमेश्वरको एक पलके लिए भी न भूलें। उसे सदा याद रखें। उसे हरदम अपनी आँखोंके आगे मानें।

और जब हम यह मानेंगे कि वह प्रभु सर्वव्यापी है, घट-घटवासी है, हर जगह मौजूद है, फिर हमसे कोई गलत काम होगा कैसे ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो आदमी भीतर और बाहर सर्वत्र भगवान्‌के दर्शन करता है, उसका जीवन पवित्र हुए बिना रहेगा कैसे ?

जो आदमी भगवान्‌का सदा स्मरण करता रहेगा, वह हर काम-को करते समय सोचेगा कि मैं जो करता हूँ वह ठीक है न ? अपनी रोजीके लिए जो काम करता हूँ, वह पवित्र है न ?

पवित्र जीवन

ऐसा आदमी पवित्र जीवन ही बितायेगा। दूसरोंकी सेवा करेगा। सच बोलेगा। सच्चा आचरण करेगा। किसीको न तो धोखा देगा, न किसीको सतायेगा। न किसीको मारेगा, न किसीको गाली देगा। प्रेम, सद्‌भाव, सदाचार, सेवा, दया, करुणा और सत्यसे उसका हृदय भरा रहेगा।

नानकका आदेश है: (१) नाम जपो, (२) किरत करो और (३) वण्डके छको। पसीनेकी कमाई मिल बाँटकर खाओ। जो ऐसा करते हैं, उन्हींको वाह गुरूका, परम प्रभुका प्रसाद मिलता है।

कथा और कीर्तन, नाम-जप और नाम-स्मरण, वेदपाठ और ग्रंथपाठका एक ही तो लक्ष्य है कि हृदय शुद्ध हो, मनका मैल मिटे और जीवनमें सत्य, प्रेम और करुणाका विकास हो। यह है तो सब सार्थक है, नहीं तो सब व्यर्थ है। गुरुग्रंथमें कहा ही है:

तैं नर किआ पुरान सुनि कीना ?
अनपावनी भगति नहिं उपजी, भूखै दानु न दीना ॥
कामु न बिसरिओ, क्रोध न बिसरिओ, लोभु न छूट्यो देवा ।
परनिंदा मुख ते नहीं छूटी, निफल भई सब सेवा ॥
हिंसा तउ मन ते नहि छूटी, जीउ दइआ नहीं पाली।
परमानंद साध संगति मिलि, कथा पुनीत न चाली ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ४ :

जपुजी साहिब

में कहा है

जपुजी आदिगुरु नानकदेवकी रचना है। छोटी, मीठी और अनूठी।

पारसी लोग गाथापर जैसी श्रद्धा करते हैं, बौद्ध धम्मपदपर, हिन्दू गीतापर, उसी तरह सिख जपुजीपर श्रद्धा करते हैं।

गुरुग्रंथ साहिबका आरम्भ होता है जपुजीसे। लोग मानते हैं कि आदिगुरुके सारे उपदेशोंका सार इसमें समाया है। सिख रोज उसका मंगलपाठ करते हैं। उसे जपते हैं।

लोग कहते हैं कि जपुजीमें विचारोंको ऐसा कस दिया गया है, जैसा कूजेमें दरिया। जो कोई उसमें गोता लगाता है, उसका तन ही नहीं, मन भी पवित्र हो जाता है।

आइये, हम जपुजीकी हलकी-सी झाँकी करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूल मंत्र : १ :

१ ऊँकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ ।
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

यह है मंगलाचरण !
अपना हर काम हम शुरू करेंगे, उस भगवान्‌की कृपासे :
जो एक है।
जो ऊँकार है।
जिसका नाम सत्य है।
जो कर्त्ता है—जो सबकी सृष्टि करता है।
जो समर्थ पुरुष है।
जो निर्भय है, जिसे किसीका डर नहीं।
जो निर्वैर है, जिसका किसीसे वैर नहीं।
जो कालकी पहुँचसे परे है।
जिसका जन्म नहीं है।
जो स्वयंभू है।
जो गुरु है।

जपु : २ :

आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु ॥

सबसे आदिमें, सबसे पहले जब कि और कुछ नहीं था, उस समय केवल सत्यरूप परमात्मा था। जब जुगोंका, कालका विभाग होने लगा, तब भी वह सत्यरूप परमात्मा था। आज भी वह सत्यरूप परमात्मा है। आगे भी वह सत्यरूप परमात्मा रहेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नानक कहते हैं कि सत्यरूप परमात्मा सदासे है, आदिकालसे है, जुग-जुगसे है, भूतकालमें था, वर्तमानमें है और भविष्यमें भी रहेगा।

ऐसा है, वह सत्यरूप परमात्मा !

हुकमि रजाई चलणा : ३ :

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिव तार ।।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ।।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ।। १ ।।

शौच माने सफाई। सफाई बाहरी और भीतरी। नानकदेव कहते हैं कि भले ही हम लाखों बार सफाई करें, उससे कुछ होनेवाला नहीं है। हम चुप होकर बैठ जायँ, तो भी मनकी वासनाओंका उठना बन्द नहीं होता। भले ही हम भूखे रहें और सारे संसारको अपने काबूमें कर लें, तो भी हमारी असली भूख मिटनेवाली नहीं। चाहे जितना हम सयानापन करें, उससे काम बननेवाला नहीं। हमें इन बाहरी बातोंसे सत्यके दर्शन होनेवाले नहीं।

सवाल है कि हम सच्चे कैसे बनें ? झूठका परदा कैसे टूटे ? हमें सत्यके दर्शन कैसे हों ?

एक ही उपाय है उसका : 'हुकमि रजाई चलणा'। उस मालिककी मरजीपर अपनेको छोड़ देना। उसकी आज्ञाके अनुसार चलना, उसके आदेशपर चलना। यही है एक रास्ता !

परमात्माका यह आदेश हमारे साथ ही लिखा हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख-सुख पाईअहि ।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभुको बाहरि हुकम न कोइ ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥

इस संसारमें परमात्माका ही हुकुम चलता है । उसीके हुकुमसे संसारके तरह-तरहके आकार बनते हैं । उसके हुकुमका बखान नहीं किया जा सकता, उसीके हुकुमसे सारे जीव पैदा होते हैं और उसीसे ऊँचा पद मिलता है । उसीसे ऊँची गति मिलती है, उसीसे नीची गति मिलती है । जैसा हुकुम होता है, वैसा ही दुख मिलता है, वैसा ही सुख मिलता है । हुकुमसे ही मुक्ति मिलती है और हुकुमसे ही भव-सागरमें चक्कर काटना पड़ता है । सब लोग उसके हुकुमके भीतर हैं । उसके हुकुमके बाहर कोई नहीं ।

नानक कहते हैं कि जो आदमी हुकुमको समझ लेता है, उसका अहंभाव मिट जाता है । फिर वह किसी कामके बारेमें नहीं कहता कि यह मैंने किया या वह मैंने किया ।

गावै को ताणु होवै किसै ताणु । गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडि आईआ चार । गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह । गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि । गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि । कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि । जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु । नानक विगसै बेपरवाहु ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लोग अपने अनुभवके अनुसार परमात्माका वर्णन करते हैं। जिसे उससे शक्ति मिली है, वह शक्तिका बखान करता है। कोई उसकी उदारताका बखान करता है, कोई नियामतोंका। कोई गुणोंका, कोई उसके ज्ञानका। कोई यही कहता है कि वह देहको बनाकर उसे मिट्टी कर देता है। कोई कहता है कि वह जीव लेकर फिर दे देता है।

कोई कहता है कि परमात्मा बहुत दूर है, कोई कहता है कि परमात्मा सामने हाजिर है। करोड़ों लोग तरह-तरहसे उसके गुणों-

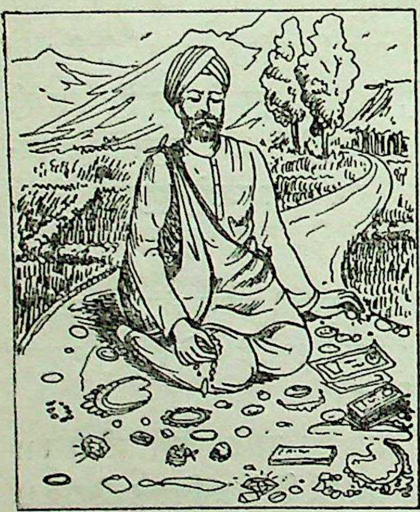

की गाथा गाते रहे, पर वह कभी पूरी नहीं हुई।

वह ऐसा दाता है, जो देता ही चला जाता है। लेने-वाला थक जाता है, देनेवाला नहीं। युग-युगसे लोग उसका दिया हुआ ही खाते हैं।

नानक कहता है कि उस हुकुम करनेवालेने एक राह बना ली है। जो उस पर चलेंगे, उनका भला होगा। वह हुकुम देनेवाला बिलकुल बे-परवाह है और हमेशा आनन्दमें मगन रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साचा साहिबु साचु नाइ : ४ :

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥

वह साहब, वह स्वामी सच्चा है, उसका नाम सच्चा है। उसके बखानके अनगिनत भाव हैं। लोग उससे माँगते हैं, हमें दो, हमें दो और वह दाता देता ही चला जाता है।

सवाल है, जब मैं उसके दरबारमें हाजिर होऊँगा, तो कौन चीज मैं उसकी भेट करूँगा ? ऐसी कौन बात बोलूँगा, जिसे सुनकर वह मुझपर प्रेम करे ?

हमें चाहिए कि हम अमृत-वेलामें, सबेरे तड़के उठकर भगवान्‌का सच नाम लें और उसकी बड़ाईपर विचार करें। हम जैसे कर्म करते हैं, वैसा चोला हमें मिलता है। मोक्ष तो हमें तभी मिलेगा, जब हमपर उसकी दया-दृष्टि होगी।

नानक कहते हैं कि हम यह बात जान गये कि वह परमात्मा ही सत्य-स्वरूप है और वही सब कुछ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थापिआ न जाइ कीता न होइ । आपे आपि निरंजनु सोइ ।।
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु । नानक गावीऐ गुणी निधानु ।।
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ । दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ।।
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ।।
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ।

गुरा इक देहि बुझाई ।।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। ५ ।।

उसे न तो कोई स्थापित कर सकता है और न कोई बना ही सकता है । वह अपने-आप ही है, निरंजन है । जिसने उसकी सेवा की, उसे मान मिला है । नानक कहते हैं कि ऐसा जो गुणनिधान है, उसके गुणोंका हम बखान करें । हम उसके गीत गायें और उसीको सुनें । उसके लिए मनमें प्रेम रखें, तो हम दुःखसे छूटकर सुखके धाम-में पहुँच सकते हैं ।

गुरुकी वाणी ही नाद है, आदिशब्द है । वही वेद है, क्योंकि गुरुके मुखमें परमात्मा समाया हुआ है । गुरु ही ईश्वर है, गुरु ही गोरख है, विष्णु है। गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही पार्वती है । गुरु ही माता लक्ष्मी है । मैं उसे जान लूँ, तो भी उसका बखान नहीं कर सकता, क्योंकि वह वाणीसे परे है ।

हे गुरु, मुझे एक बात समझा दो : 'सभी जीवोंका जो एक दाता है, उसे मैं कभी न भूलूँ ।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ।।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुरकी सिख सुणी ।
गुरा इक देहि बुझाई ।।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। ६ ।।

परमात्माको अगर यह भाये, तो मैं तीरथमें स्नान करनेको तैयार हूँ। लेकिन यदि उसे यह न भाये, तो नहानेसे क्या ? जितनी सृष्टि पैदा हुई है, वह सब मैंने देख ली है। मुझे लगता है कि विना उसकी कृपाके क्या मिल सकता है ? गुरुका उपदेश ध्यानसे सुननेसे अपनी ही बुद्धिके भीतर रतन, जवाहर और माणिक प्रकट हो जायँगे। तीर्थोंमें जानेकी जरूरत न रहेगी।

हे गुरु, मुझे एक बात समझा दो : 'सभी जीवोंका जो एक दाता है, उसे मैं कभी न भूलूँ।'

सुणिऐ दूख पापका नासु : ६ :

सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ । सुणिऐ धरति धवल आकास ।।
सुणिऐ दीप लोअ पाताल । सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।।
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पापका नासु ।। ८ ।।

सुणिऐ माने सुनना ! भगवान्का नाम सुनना।

भगवान्का नाम सुननेसे सिद्ध, पीर और बड़े-बड़े नाथ बन जाते हैं। सुननेसे धरती बनी, उसे टिकानेवाला धवल बैल बना। आकाश बना। फिर सुननेसे द्वीप बने, लोक बने और पाताल बने। सुननेसे काल बाधा नहीं डाल सकता।

नानक कहते हैं कि भक्त लोग हमेशा विकसित रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं। भगवान् का नाम सुननेसे दुःखोंका, पापोंका नाश हो जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु । सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद । सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पापका नासु ॥ ९ ॥

भगवानका नाम सुननेसे शिव, ब्रह्मा और इन्द्रपदके अधिकारी बनते हैं। सुननेसे मंदबुद्धिवालेकी तारीफ होने लगती है। सुननेसे योगकी युक्ति मालूम होती है। सुननेसे शरीरके सूक्ष्म भेदोंका पता चल जाता है। सुननेसे वेद, शास्त्र और स्मृतिका ज्ञान हो जाता है।

नानक कहते हैं कि भक्त लोग हमेशा विकसित रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं। भगवान्का नाम सुननेसे दुःखोंका, पापोंका नाश हो जाता है।

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु । सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु । सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पापका नासु ॥१०॥

भगवान्का नाम सुननेसे सत्य, सन्तोष और ज्ञान मिलता है। सुननेसे अड़सठ तीर्थोंमें स्नान करनेका फल मिलता है। सुननेसे अध्ययन होता है, चिन्तन होता है, मनन होता है। मनुष्यका मान भी बढ़ता है। सुननेसे चित्तका निरोध होकर सहज ध्यान लग जाता है।

नानक कहते हैं कि भक्त लोग हमेशा विकसित रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं। भगवान्का नाम सुननेसे दुःखोंका, पापोंका नाश हो जाता है।

मंनेकी गति कही न जाइ : ७ :

मंने की गति कही न जाइ । जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु । मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो आदमी भगवान्के गुणोंका मनन करता है, उसकी हालतका बखान नहीं हो सकता। जो बखान करता है, उसे पछताना पड़ता है। कोई बैठकर उसे लिखना चाहे, तो न कागज पूरा पड़ेगा, न कलम और न लिखनेवाला।

भगवान्का नाम निरंजन है। जो कोई मनमें उसका मनन करेगा, वही उसे जान पायेगा।

मंनै मारगि ठाक न पाइ। मंनै पति सिउ परगटु जाइ॥
मंनै मगु न चलै पंथु। मंनै धरम सेती सनबंधु॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥१४॥

मनन करनेसे रास्तेमें कोई रुकावट नहीं आती। ऐसा आदमी सम्मानके साथ सन्मार्गपर चलता है, राजपथपर चलता है। वह किसी पंथमें नहीं पड़ता। धर्मके साथ उसका पक्का संबंध हो जाता है।

भगवान्का नाम निरंजन है। जो कोई मनसे उसका मनन करेगा, वही उसे जान पायेगा।

मंनै पावहि मोखु दुआरु। मंनै परवारै साधारु॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख। मंनै नानक भवहि न भिख॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥१५॥

मनन करनेसे मनुष्य मोक्षके द्वारपर पहुँचता है। अपने परिवारको भी आधार देता है। गुरू खुद तरता है, शिष्योंको भी तारता है। नानक कहते हैं कि उसे संसारमें भीख नहीं माँगनी पड़ती।

भगवान्का नाम निरंजन है। जो कोई मनसे उसका मनन करेगा, वही उसे जान पायेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंचाका गुरु एकु धिआनु : ८ :

पंच परवाण पंच परधानु । पंचे पावहि दरगहि मानु ।।
पंचे सोहहि दरि राजानु । पंचा का गुरु एकु धिआनु ।।
जे को कहै करै वीचारु । करते कै करणै नाही सुमारु ।।१६।।

पंच माने वे, जो मालिककी मर्जीपर चलते हैं, जो उसे सत्यरूप मानते हैं, जो उसका गुणगान करते हैं, जो उसका नाम सुनते हैं और जो उसकी आज्ञाको मानते हैं।

पंच ही प्रमाण हैं, पंच ही प्रधान हैं। भगवान्‌के दरबारमें उन्हींको मान मिलता है। पंचोंसे ही राज-दरबारोंकी शोभा बढ़ती है।

पंचोंका गुरु होता है, केवल एक परमात्माका ध्यान ! वे बिना सोचे किसीकी बात नहीं मानते। सिरजनहारके कामोंकी कोई गिनती नहीं।

जो तुधु भावै साई भली कार : ९ :

असंख जप असंख भाउ। असंख पूजा असंख तप ताउ ।
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ। असंख जोग मनि रहहि उदास ।।
असंख भगत गुण गिआन वीचार । असंख सती असंख दातार ।।
असंख सूर मुह भख सार । असंख मोनि लिव लाइ तार ।
कुदरति कवण कहा वीचारु । वारिआ न जावा एक वार ।
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ।।१७।।

तेरी पूजाके असंख्य मंत्र हैं, भाव हैं, तप हैं, साधन हैं, ग्रन्थ हैं। असंख्य लोग वेदपाठ करते हैं। असंख्य योगी संसारसे उदास रहते हैं। असंख्य भक्त तेरे गुणोंका, तेरे तत्त्वका चिन्तन करते हैं। असंख्य लोग सत्यका पालन करते हैं, दान देते हैं। असंख्य वीर मुँहपर तलवार-का घाव सहते हैं। असंख्य लोग मौनी रहकर तेरी लौ लगाते हैं।

नानक कहते हैं कि तेरी कुदरतका कहाँतक वर्णन किया जाय ? मेरी हस्ती ही क्या, जो तेरा बखान करूँ ? मैं तो इस लायक भी नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि तुझपर एक बार न्यौछावर हो सकूं। अच्छा या भला वही है, जो तुझे अच्छा लगता है ! हे निरंकार, तू सदा सलामत रहता है !

असंख मूरख अंध घोर । असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर । असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि । असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि । असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु । वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख्य लोग मूर्ख और घोर अन्धे हैं, चोर हैं और हरामखोर हैं। असंख्य लोग जबरन अपनी सत्ता जमानेवाले हैं, गला काटनेवाले हैं, हत्यारे हैं, पापी हैं। झूठे काम करने वाले हैं, झूठमें रमनेवाले हैं ! म्लेच्छ हैं, मल खानेवाले हैं, निन्दक हैं। सिरपर पापोंकी गठरी लादे हैं।

नीच नानक कहता है कि मैं तो तुझपर एक बार न्यौछावर होने लायक भी नहीं हूँ। अच्छा या भला वही है, जो तुझे अच्छा लगता है। हे निरंकार, तू सदा सलामत रहता है।

असंख नाव असंख थाव ॥
अगंम अगंम असंख लोअ । असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह । अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि । अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि । जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ । विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु । वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनगिनत हैं तेरे नाम, अनगिनत हैं तेरे धाम ! अनगिनत अगम्य लोक हैं। अनगिनत कहनेसे भी सिरपर जोर पड़ता है। अक्षरोंके सहारे हम तेरा नाम जपते हैं, तेरी स्तुति करते हैं। तत्त्वका विचार करते हैं, तेरे गुण गाते हैं। अक्षरोंके सहारे ही हम लिखते हैं, बोलते हैं, तेरे साथ अपने संबंधका वर्णन करते हैं। जिसने कपालपर अक्षर लिख दिये, उससे ऊपर कोई नहीं। वह जैसा फरमाता है, वैसा मिलता है। जैसी तेरी सृष्टि, वैसा तेरा नाम ! ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ तेरा नाम नहीं।

नानक कहते हैं कि तेरी कुदरतका कहाँतक वर्णन किया जाय ? मेरी हस्ती ही क्या, जो तेरा बखान करूँ ? मैं तो इस लायक भी नहीं कि तुझपर एकबार न्यौछावर हो सकूँ ? अच्छा या भला वही है, जो तुझे अच्छा लगता है। हे निरंकार, तू सदा सलामत रहता है !

अंतरगति तीरथि मलि नाउ : १० :

भरीऐ हथु पैरु तनु देह । पाणी धोतै उतरसु खेह ।।
मूत पलीती कपड़ु होइ । दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ।।
भरीऐ मति पापा कै संगि । ओहु धोपै नावै कै रंगि ।।
पुंनी पापी आखणु नाहि । करि करि करणा लिखि लै जाहु ।।
आपे बीजि आपे ही खाहु । नानक हुकमी आवहु जाहु ।।२०।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हाथ, पाँव और शरीर धूलसे सन जाय, तो वह पानीसे धोनेसे साफ हो जाता है। पेशाबसे यदि कपड़े गन्दे हो जायँ, तो साबुनसे उसे साफ कर सकते हैं। पापसे यदि बुद्धि मैली हो जाय, तो उसके धोनेका साधन है, भगवान्‌का नाम। किसीको पुण्यात्मा या पापी कहना ठीक नहीं। वह जैसा करता है, उसको वैसा फल मिलता है। जैसा बोओगे, वैसा पाओगे।

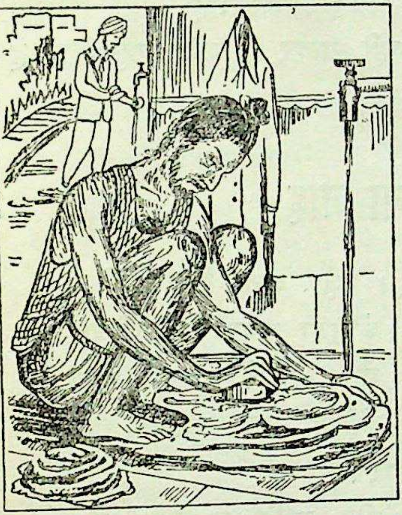

नानक कहते हैं कि भगवान्‌की जैसी मर्जी है, उसीके अनुसार तुम आओ, उसीके अनुसार जाओ।

तीरथु तपु दइआ दतु दानु । जे को पावै तिल का मानु ।।
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ । अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।।
सभि गुण तेरे मैं नाही कोइ । विणु गुण कीते भगति न होइ ।।
सुअसति आथि बाणी बरमाउ । सति सुहाणु सदा मनि चाउ ।।२१।।

तीरथ करो, तप करो, दया करो, दान करो—इनसे थोड़ा-सा मान मिल सकता है। परन्तु जो कोई भगवान्‌का नाम सुनता है, उसका मनन करता है, उसपर चलता है और हृदयसे उसपर श्रद्धा करता है, उसने मानो सारे तीरथ नहा लिये। अन्तरके तीरथमें नहाकर उसने मानो सब पाप धो डाले।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जितने भी गुण हैं, सब तेरे हैं, मुझमें कोई गुण नहीं। बिना गुणके भक्ति हो नहीं सकती। ब्रह्मकी वाणी ही सबसे अच्छी है, कल्याणमय है। वही सत्य है, वही सुन्दर है और वही शिव है। उसीका हम सदा चिन्तन करें।

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ : ११ :

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ। बड़ा दाता तिलु न तमाइ॥
केते मंगहि जोध अपार। केतिआ गणत नही वीचारु॥
केते खपि तुटहि वेकार। केते लै लै मुकरु पाहि॥
केते मूरख खाही खाहि। केतिआ दूख भूख सद मार॥
एहि भि दाति तेरी दातार॥
बंदि खलासी भाणै होइ। होरु आखि न सकै कोइ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ। ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ॥
आपे जाणै आपे देइ। आखहि सि भि केई केइ॥
जिसनो बखसे सिफति सालाह। नानक पातिसाही पातिसाहु॥२५॥

प्रभुकी उदारताका, उसकी दयाका पार नहीं है। उसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता। वह बहुत बड़ा दाता है। उसमें रत्ती भर भी लोभ नहीं। कितने ही योद्धा उससे माँगते हैं। और भी कितनेही लोग उसके आगे हाथ पसारते हैं। उनकी गिनती नहीं हो सकती। कुछ ऐसे हैं, जो विकारोंमें फँसकर शरीरको तोड़ डालते हैं। कितने ही ऐसे हैं, जो लेकर भी मुकर जाते हैं। कुछ मूरख ऐसे हैं, जो खाते ही चले जाते हैं। कितने ही ऐसे हैं, जो दुःख और भूखकी मारसे मरते हैं, पर कहते हैं कि हे दाता ! यह भी तेरी कृपा ही है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे मालिक, तेरी मर्जीसे ही बन्धन होता है और मुक्ति मिलती है। उसमें किसीका दखल नहीं है। जो मूरख उसमें दखल दे, उसे मुँहकी खानी पड़ेगी।

वह ईश्वर जानता है कि हमें क्या चाहिए। उसी हिसाबसे वह देता है। पर इस बातको मानते हैं बिरले ही लोग।

नानक कहते हैं कि वह बादशाहोंका भी बादशाह है, जिसने उसे अपने गुण गानेकी देन दी है।

अमुल गुण अमुल वापार। अमुल वापारीए अमुल भंडार॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि। अमुल भाइ अमुला समाहि॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु। अमुलु तुलु अमुलु परवाणु॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु। अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु॥
अमुलो अमुलु आखिआ नजाइ। आखि आखि रहे लिवलाइ॥२६॥

अनमोल हैं भगवान्के गुण ! अनमोल है उनका लेन-देन ! अनमोल हैं व्यापार और अनमोल हैं व्यापारी ! अनमोल हैं भंडार ! अनमोल हैं, जो इस व्यापारके लिए आते-जाते हैं। अनमोल हैं वे, जो भगवान्से प्रेम करते हैं, भगवान्में समा जाते हैं। अनमोल है भगवान्का धर्म ! अनमोल है उसका दरबार ! अनमोल है उसकी तौल ! अनमोल है उसका पैमाना ! अनमोल है उसकी बख्शीश और अनमोल हैं उसके चिह्न। अनमोल है उसकी दया और अनमोल है उसकी आज्ञा। उसका सब कुछ अनमोल ही अनमोल है। उसका बखान नहीं किया जा सकता। कहकर चुप रह जाना पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सो दरु केहा सो घरु केहा ?

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ।।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।।
गावहि तुहनो पउणु पाणी, बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ।
गावहि चितुगुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ।।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ।
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ।
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ।।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ।
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ।।
गावनि रतनि उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।।
गावहि जोध महाबल सरा गावहि खाणी चारे ।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ।।
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ।।
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।।
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ।।
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ।।२७।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कैसा होगा तेरा द्वार ! कैसा होगा तेरा घर, जहाँ बैठकर तू सारी दुनियाकी सँभाल करता है। अनगिनत बाजे बज रहे हैं वहाँ ! न जाने कितने बजानेवाले हैं वहाँ ! न जाने कितनी राग-रागिनियाँ गायी जा रही हैं। न जाने कितने गानेवाले हैं !

पवन, जल और अग्नि तेरा गुण गाते हैं। धनराज तेरे दरवाजे-पर बैठे हैं। मनुष्योंके कर्मोंका लेखा-जोखा रखनेवाला चित्रगुप्त लिखता भी जाता है और तेरा गान भी गाता जाता है। शिव, ब्रह्मा और शक्ति, जिन्हें तूने सँवारा है, तेरे गीत गाते हैं।

इन्द्रासनपर बैठा हुआ इन्द्र देवताओंके साथ तेरा गान गा रहा है। सिद्ध लोग समाधि लगाये हुए और साधु लोग ध्यान लगाये हुए तेरा गीत गा रहे हैं। जती, सती और सन्तोषी तेरा गीत गाते हैं। बड़े-बड़े वेदपाठी पण्डित और ऋषि जुग-जुगसे तेरा गान करते हैं। तीनों लोकोंकी सुन्दरियाँ तेरे गीत गाती हैं। तूने जो रत्न पैदा किये हैं, वे और अड़सठ तीरथ तेरे गीत गाते हैं। बड़े-बड़े वीर और बलवान् तेरी महिमा गाते हैं। चारों तरहके जीव, तेरे बनाये हुए सारे ब्रह्मांड, उसके खंड और लोक तेरे गीत गाते हैं। वे ही तेरे गुणों का गान करते हैं, जो तुझे भाते हैं और जो तेरे गुणोंमें डूबे हैं। और भी न जाने कितने तेरे गीत गाते हैं। बेचारा नानक उन्हें कैसे गिनाये ?

सच्चा, सच्चे नामवाला वह साहब सदा जैसेका तैसा रहता है। उसने सारी सृष्टि रची है। वह अभी भी है, आगे भी रहेगा। उसकी रचना तरह-तरहकी रंग-बिरंगी है। उसने उसे रचा है और वही उसकी सँभाल करता ह।

नानक कहते हैं कि उसे जो भाता है, वही वह करता है। उसे कोई हुकुम नहीं दिया जा सकता। वह बादशाहोंका भी बादशाह है। सब कुछ उसीकी मर्जीपर निर्भर है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ।
खिथा कालु कूआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

तू सन्तोषकी मुद्रा धारण कर। श्रमकी झोली ले ध्यानकी विभूति लगा। काल ही तेरी गुदड़ी है। काया तेरी कुँवारी रहे, निष्कलंक रहे, पवित्र रहे। विश्वास ही तेरा डंडा हो। सबको तू अपनी जमातका मान। मनको तू जीत ले, मानो तूने सारा जग जीत लिया !

आदेश कर, प्रणाम कर उसको, जो आदि ईश है। जो आदि है, जिसका कोई रंग-रूप नहीं। जो अनादि है, जिसका कोई अन्त नहीं और जो जुग-जुगसे एकरूप है।

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ।
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइकार चलावहि लेखे आवहि भाग ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

ज्ञान ही तेरा भोजन है। दया तेरी भंडारिन है। घट-घटमें बजनेवाला नाद तेरी सारंगी है। जिसने सारी दुनियाको नाथ रखा है, वही तेरा नाथ है। ऋद्धि-सिद्धि तेरे लिए नहीं हैं। संयोग और वियोग—दोनों नियम संसारको चलाते हैं। इनमें भाग्यसे अपना भाग मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदेश कर, प्रणाम कर उसको जो आदि ईश है। जो आदि है, जिसका कोई रंग-रूप नहीं। जो अनादि है, जिसका कोई अन्त नहीं और जो जुग-जुगसे एकरूप है।

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ।
इक संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

एक है दुनियाकी माई, माया ! उसने युक्ति लगायी और तीन चेले या तीन बेटे जने : एक तो है संसारको रचनेवाला—ब्रह्मा, दूसरा है पालनेवाला भंडारी—विष्णु और तीसरा है दण्ड देनेवाला दीवान—शंकर। परमात्मा जैसा चाहता है, वैसे सबको चलाता है, वैसी आज्ञा देता है। वह तो सबको देखता है, पर सब उसे नहीं देखते। वह बहुत अद्भुत है।

आदेश कर, प्रणाम कर उसको जो आदि ईश है। जो आदि है, जिसका कोई रंग-रूप नहीं। जो अनादि है, जिसका कोई अन्त नहीं और जो जुग-जुगसे एक रूप है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नानक नदरी नदरि निहाल : १४ :

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु । अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तपताउ । भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल । जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

संयमको तू अपनी भट्ठी बना और धीरजको अपना सुनार। बुद्धिको बना अहरन और आत्मज्ञानको हथौड़ा। परमात्माके भयकी बना धोंकनी और तपकी जला अग्नि। प्रेमका बना साँचा और नामका अमृत उसमें ढाल। ऐसी सच्ची टकसालमें शब्द गढ़ा जा सकेगा। ऐसा काम वे ही कर सकते हैं, जिनपर भगवान्की कृपा है।

नानक कहते हैं कि परमेश्वरकी कृपासे कितने ही भक्त निहाल हो जाते हैं।

जिनी नाम धिआइया.... : १५ :

सलोकु

पवण गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चांगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ, गए मसकति घालि ।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पवन हमारा गुरु है, जल हमारा पिता और इतनी बड़ी पृथ्वी है हमारी माता ! दिन और रात ये दोनों हैं, हमारी धाय। सारा संसार इन्हींकी गोदमें खेलता है।

किसने अच्छे काम किये, किसने बुरे काम किये, यह सब धर्म-राजके दरबारमें जाँचा जाता है। मनुष्यके कर्म ही उसे भगवान्के पास ले जाते या उससे दूर कर देते हैं।

जिन्होंने भगवान्के नामका अभ्यास किया, उनकी मेहनत सफल हो गयी। नानक कहते हैं कि ऐसे लोगोंके मुख उज्ज्वल हो गये और उनके सत्संगसे कितने ही आदमी भवसागरसे पार हो गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

: ५ :

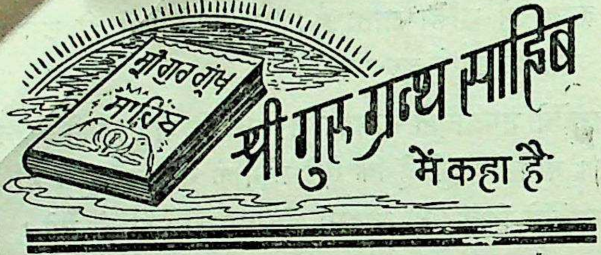

'गुरु-ग्रंथ' है गुरुका अपना ग्रंथ। इसे 'गुरुवाणी' भी कहा जाता है। इसमें गुरु अपने शिष्योंसे बोलता है। गुरु अपने शिष्योंको उपदेश देता है।

कैसा उपदेश ?

वह उपदेश, जिससे शिष्यका जन्म सार्थक हो जाय। उसका जीवन पवित्र हो जाय। वह भवसागरसे तर जाय।

सिखोंका धर्मग्रंथ है श्री गुरुग्रंथ साहिबजी। गुरुकी भाँति ही उसके प्रति श्रद्धा रखनेका आदेश है।

कोई १५०० बड़े-बड़े पृष्ठोंके गुरुग्रंथमें आदि-गुरु नानक तथा दूसरे गुरुओंकी और कबीर, रैदास, नामदेव, धना, फरीद, भीखन, वेणी, सूरदास आदि संतोंकी जो वाणी है, उसपर जो आचरण करेगा, वह तरे बिना न रहेगा, इसमें सन्देह नहीं।

आइये, हम उसकी हलकी-सी झाँकी करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्दु

गुरु मेरी पूजा गुरु गोविन्दु ।
गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवन्तु ॥
गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ।
सरब पूज चरन गुर सेउ ॥
गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ।
अनदिनु जपउ गुरु गुर नाउ ॥
गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ।
गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥
गुरकी सरणि रहउ कर जोरि ।
गुरू बिना मै नाहीं होरु ॥
गुरु बोहिथु तारे भव पारि ।
गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥
अंधकार महि गुर मंत्रु उजारा ।
गुरकै संगि सगल निसतारा ॥
गुरु पूरा पाईऐ बड़भागी ।
गुर की सेवा दूखु न लागी ॥
गुर का सबदु न मेटै कोइ ।
गुरु नानकु नानकु हरि सोइ ॥

गुरु परमेसरु एको जाणु

गुरु परमेसरु एको जाणु । जो तिसु भावै सो परवाणु ॥
गुर चरणी जाका मनु लागै । दूखु दरदु भ्रमु ताका भागै ॥
गुर की सेवा पाए मानु । गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥
गुरके सेवक कउ दुखु न बिआपै । गुरका सेवक दहदिसि जापै ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुरकी महिमा कथनु न जाइ । पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥
कहु नानक जा के पूरे भाग । गुर चरणी ताका मनु लाग ॥ २

बिनु गुर मुकति न पाइऐ भाई

गुरकी मूरति मन महि धिआनु ।
गुरकै सबदि मंत्रु मनु मान ॥
गुरके चरन रिदै लै धारउ ।
गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥

मत को भरमि भुलै संसारि ।
गुर बिन कोइ न उतरसि पारि ॥
कहु नानक प्रभि इहै जनाई ।
बिनु गुर मुकति न पाइऐ भाई ॥ ३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पारब्रह्म अपरंपर देवा

पारब्रह्म अपरंपर देवा ।
अगम अगोचर अलख अभेवा ॥
दीन दइआल गोपाल गोबिन्दा ।
हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥
गुरमुखि मधुसूदन निसतारे ।
गुरसुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥
दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ ।
होरतु कितै न भाती जीउ ॥
निरहारी केसव निरवैरा ।
कोटि जना जा कैं पूजहि पैरा ॥
गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि ।
सोई भगतु इकाती जीउ ॥
घ दमोरसन बेअंत अपारा ।
बड़ समरथु सदा दातारा ॥
गुरमुखि नासु जपीऐ तितु तरीऐ ।
गति नानक विरली जाती जीउ ॥[४]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुखभंजन निधान अमोले

लाल गोपाल दइआल रंगीले ।
गहिर गंभीर बेअंत गोबिंदे ॥
ऊच अथाह बेअंत सुआमी ।
सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥

दुखभंजन निधान अमोले ।
निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥
अकाल मूरति अजूनी संभौ ।
मन सिमरत ठंडा थीवां जीउ ॥

सदा संगी हरि रंग गोपाला ।
ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥
नाम रसाइणु मनु त्रिपताइणु ।
गुरमुखि अंम्रितु पीवां जीउ ॥

दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ।
एह सुमति गुरू ते पाई ॥
नानक की धर तूं है ठाकुर ।
हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जहँ जहँ देखउँ, तहँ तहँ रामा

: ३ :

सभै घट रामु बोलै, रामा बोलै,
राम बिना को बोलै रे।।
एकल माटी कुंजर चीटी, भाजन हैं बहु नाना रे।।

असथावर जंगम कीट पतंगम, घटि घटि रामु समाना रे।।
एकल चिंता राखु अनंता, अउर तजहु सभ आसा रे।।
प्रणवै नामा भए निहकामा, को ठाकुर को दासा रे।।[६]

जहँ जहँ देखउँ तहँ तहँ रामा

जह जह देखउ, तह तह रामा ।
हरि के चरन नित धिआवै नामा।।[०]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जहँ जहँ पेखउँ तहँ हजूरि

जह जह पेखउ तह हजूरि ।
दूरि कतहु न जाई ।।
रवि रहिआ सरबत्र ।
भै मन सदा धिआई ।। ८

सभि घट तेरे, तू सभना माहि

सभि घट तेरे तू सभना मांहि ।
तुझ ते बाहरि कोई नांहि ।।
हरि सुखदाता मेरे मन जापु ।
हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ।।
जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ।
सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ।।
जलि थलि मही अलि सभतै भरपूरि ।
जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ।। २

तुझ बिन दूजा कोई नाहिं

तू दरीआउ सभ तुझ ही मांहि ।
तुझ बिनु दूजा कोई नांहि ।।
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ।
विजोगि मिलि बिछुड़िआ संजोगी मेलु ।।
तूँ आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ।
तुध विनु दूजा अवरु न कोइ ।।
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ।
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ।। १०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घट ही खोजहु भाई

काहे रे वन खोजन जाई ।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है, मुकर माहि जैसे छाई ।
तैसे ही हरि बसै निरंतरि घट ही खोजहु भाई ।।
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ।
जन नानक बिनु आपा चीन्है मिटै न भ्रम की काई ।। [११]

मंदा किसनो आखीए ?

आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ।
मंदा किसनो आखीए जां सभना साहिबु एकु ।
सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ।
किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ।। [१२]

साधो इह तनु मिथिआ जानो : ४ :

साधो इह तनु मिथिआ जानउ ।
या भीतरि जो राम वसतु है साचो ताहि पछानो ।।
इहु जगु है संपति सुपनेकी देखि कहा ऐडानो ।
संगि तिहारे कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ।।
उसतति निंदा दोऊ परहर हरि कीरति उर आनो ।
जन नानक सभ ही मैं पूरन एक पुरख भगवानो ।। [१३]

खिन महि बिनसि जाइ अहँकारी

पानी मैला माटी गोरी । इस माटी की पुतरी जोरी ।।
मैं नाहि कछु आहि न मोरा । तनु धनु सभु रस गोबिंद तोरा ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस माटी महि पवनु समाइआ । झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥
किनहू लाख पाँच की जोरी । अंतकी बार गगरीआ फोरी ॥
कहि कबीर इक नीव उसारी । खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥[१८]

मीचु बिलइआ खइहै रे

ऐसो इहु संसार पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ।
सूधे सूधे रेग चलहु तुम नतर कु धका दिवईहै रे ॥
बारे बूढ़े तरुने भईया सभहू जम लै जईहै रे ।
मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥

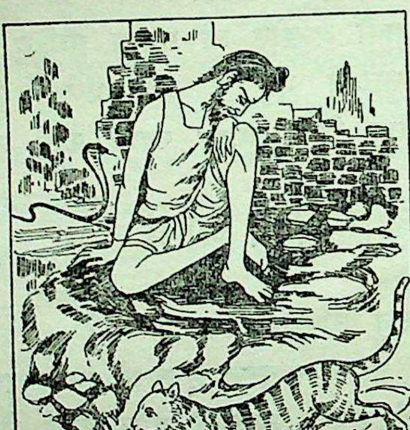

धनवंता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानी रे ।
राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥
हरिके सेवक जो हरि भाए तिनकी कथा निरारी रे ।
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जिअ जानी रे ।
कहत कबीर सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥[१५]

घट फूटे कोउ बात न पूछे

जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ।
तेल जले बाती ठहरानी सूना मंदरु होई ॥
रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ।
तूं राम नामु जपि सोई ॥
काकी मात पिता कहु काको कवन पुरख की जोई ।
घट फूटे कोऊ बात न पूछै, काढहु काढहु होई ॥
देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ लै गए भाई ।
लट छिटकाए तिरीआ रोवै, हंसु अकेला जाई ॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ।
इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नहीं हटै गुसाई ॥[१६]

जनमु ब्रिथा जात : ५ :

भई परापति मानुख देहरीआ ।
गोबिंद मिलण की इह तेरी बेरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ।
मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ।
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ।
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहु नानक हम नीच करंमा ।
सरणि परे की राखहु सरमा ।।[१७]

रैणि गवाई सोइकै दिवसु गवाइआ खाइ ।
हीरे जैसा जनमु है कउड़ी बदले जाइ ।।

नामु न जानिआ रामका, मूड़े फिरि पाछे पछुताहि रे ।
अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ।
अनत कउ चाहन जो गए, से आए अनत गवाइ ।।
आपण लीआ जे मिलै ता सभुको भागठु होइ ।
करमा उपरि निबडै जे लोचै सभु कोइ ।।
नानक करणा जिमि कीआ सोई सार करेइ ।
हुकमु न जापी खसमका किसै बड़ाई देइ ।।[१८]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धाइओ रे मन दहदिस धाइओ ।
माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ
तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥
हरिकथा हरिजस साध संगति सिउ
इकु मुहतु न इहु मनु लाइयो ।
बिगसिओ पेखि रंगु कसुंभ को पर गृह जोहनि जाइयो ॥
चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सतपुरखु मनाइओ ।
धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ।

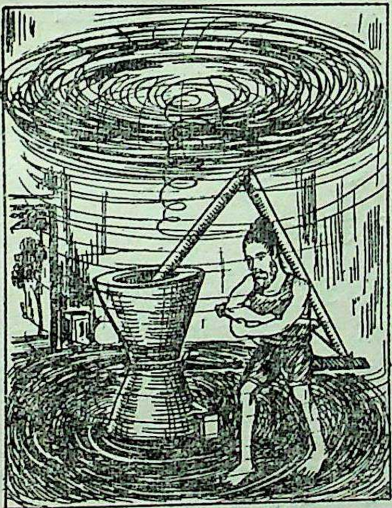

नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ।
नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परउपकार न कबहू कीए, नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ।
पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥
करउ बेनती साध संगति हरि भगति बछल सुणि आइओ ।
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥[१९]

मन मैले सभु किछु मैला

मनि मैले सभु किछु मैला, तनि धोतै मनु हछा न होइ ।
इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥
जपि मन मेरे तू एको नामु ।
सतगुरि दीआ मोकउ एहु निधानु ॥
सिधा के आसण जे सिखै इन्द्री वसि करि कमाइ ।
मनकी मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥
इसु मन कउ होरु संजमु को विणु सतिगुर की सरणाइ ।
सतगुर मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥
भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ।
ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥[२०]

मन रे कउन कुमति तै लीनी

मन रे कउन कुमति तै लीनी ।
परदारा निंदिआ रस रचिओ, राम भगति नहि कीनी ।
मुकति पंथु जानिओ तै नाहिन, धन जोरन कउ धाइआ ।
अंति संगि काहू नही दीना, बिरथा आपु बंधाइआ ॥
ना हरि भजिओ ना गुर जनु सेविओ, नह उपजिओ कछु गिआना ।
घट ही माहि निरंजनु तेरै, तै खोजत उदिआना ॥
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ, असथिर मति नहि पाई ।
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥[२१]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मन मारे बिनु भगति न होई

मन का सुभाउ मनहि बिआपी । मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥
कवनु सु मुनि जो मनु मारै । मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥
मन अंतरि बोलै सभु कोई । मन मारे बिनु भगति न होई ॥
कहु कबीर जो जानै भेउ । मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥[२२]

मनु मारे धातु मरि जाइ

मनु मारे धातु मरि जाइ । बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥
मनु मरै दारू जाणै कोइ । मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥
जिसनो बखसे दे वडिआई । गुरपरसादि हरि वसै मनि आई ॥
मनु असाधु साधै जनु कोइ । अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि । हउमै विचहु तजे विकार ॥
जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ । कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥
आपणी कला आपे ही जाणै । नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥[२३]

तिनि जगि ततु पछाना

साधो मनका मान तिआगउ ।
काम क्रोधु संगति दुरजन की ताते अहिनिसि भागउ ॥
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ।
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ।
जन नानक इहु खेलु कठिनु है किनहू गुरमुखि जाना ॥[२४]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्तरि मैलु जे तीरथ नावै

अंतरि मैलु जे तीरथ नावै, तिसु वैकुंठ न जाना ।
लोक पतीणे कछू न होवै, नाही रामु अयाना ।।
पूजहु रामु इक ही देवा । साचा नावणु गुरकी सेवा ।।
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ।
हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ।।
दिवसु न रैनि बेदु नहीं सासत्र तहाँ बसै निरंकारा ।।
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिया संसारा ।।[२५]

ऐसा ब्राह्मण कही न सीझै

अंतरि लोभु फिरहि हलकाए । निंदा करहि सिरि भारु उठाए ।।
माइआ मूठा चेतै नाही । भरमे भूला बहुती राही ।।
बाहरि भेख करहि घनेरे । अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ।।
अवर उपदेसै आपि न बूझै । ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ।।
मूरख बामण प्रभू समालि । देखत सुनत तेरै है नालि ।।
कहु नानक जे होवी भागु । मानु छोड़ि गुर चरणी लागु ।।[२६]

काहे भइया संनिआसी

अंतरु मलि निरमलु नही कीना, बाहरि भेख उदासी ।
हिरदै कमल घटि ब्रहमु न चीना, काहे भइया संनिआसी ।।
काइ जपउ रे काइ तपउ रे काइ बिलोवहु पाणी ।
लख चउरासीह जिनि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ।।
काइ कमंडलु कापड़ीया रे अठसठि काइ फिराही ।
बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ।।[२७]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बिखु नहीं छाड़ै

साप कुंच छोडै बिखु नही छाड़ै ।
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ।।

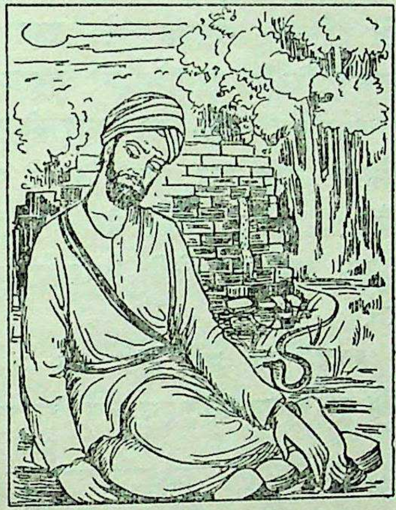

काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ।
जब ते सुधु नाही मनु अपना ।।[२८]
गृहु तजि बनखंड जाइऐ चुनि खाइऐ कंदा ।
अजहु बिकार न छोड़ई पापी मनु मंदा ।।[२९]

बवा वैरु न करिए काहू : ८ :

वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ।
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ।।
बवा वैरु न करीऐ काहु ।
घट घट अंतरि ब्रहम समाहु ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वासुदेव जल थल महि रविआ ।
गुर प्रसादि बिरलै ही गविआ ।।
वैर विरोध मिटे तिह मन ते ।
हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ।।
बरन चिनह सगलह ते रहता ।
नानक हरिहरि गुरमुखि जो कहता ।।[३०]

रोस न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ।
होइ निसाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ।। [३१]

निरवैरै नालि जि वैरु रचाए ।
सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ।। [३२]

तउ किउ मुरगी मारै

वेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न बिचारै ।
जउ सभ महि एक खुदाइ कहत हउ, तउ किउ मुरगी मारै ।।

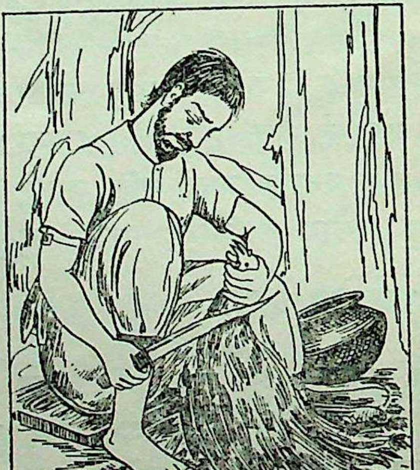

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुलां कहहु निआउ खुदाई, तेरे मनका भरमु न जाई ॥
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी, माटी कउ बिसमिलि कीआ ।
जोति सरूप अनाहत लागी, कहु हलालु किआ कीआ ॥
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ, किआ मसीति सिरु लाइआ ।
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु, किआ हज काबै जाइआ ॥
तूं नापाकु पाकु नहीं सूझिआ, तिसका भरमु न जानिआ ।
कहि कबीर भिसति ते चूका, दोजक सिउ मनु मानिआ ॥ ३३

सभु सचु बरतै सचो बोलै : ९ :

जिन्ही सचु पछाणिया से सुखीए जुग चारि ।
हउमै त्रिसना मारिकै सचु रखिआ उरधारि ॥
साचउ बखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ।
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ।
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ ३४
मनि जूठै तनि जूठि है जिहवाँ जूठी होइ ।
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥
बिनु अभ सबद न माँजीऐ साचे ते सचु होइ ॥
जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीजै वासु ।
पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ ३५
रागा विचि स्री रागु है जे सचि धरे पिआरु ।
सदा हरि सचु मनि बसै निहचल मति अपारु ॥
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ।
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥ ३६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंतरु सचा मनु सचा

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ।
अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वड़भाग हमारा ॥
मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ।
दासनि दास होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥
जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ।
बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥
सचु खेती सचु बीजणा साचा बापारा ।
अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भण्डारा ॥
सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरिनाउ ।
जिसनो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ।
आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ।
गुरमुखि दरि साचे सचिआर हहि साचे माहि समाइ ॥
अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ।
सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥
सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ।
सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥
नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ।
जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ३७

जिसदी साची बाणी

हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइया
जिसदी साची बाणी ।
सची भगति करहि दिनु राती
गुरमुखि आखि बखाणी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगताकी चाल सची अति निरमल नामु
सचा मनि भाइआ ।
नानक भगत सोहहि दरि साचै
जिनी सचो सचु कमाइआ ।। ३८

साचा साहिबु साची नाई

सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ।
हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ।।
साचे गुण गावै सचि सभावै सचु वेखै सभु सोई ।
नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ।। ३९

सभु सचु वरतै सचो बोलै

सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ।
निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ।।
सभु सचु वरतै सचो बोलै, जो सचु करै सु होई ।
जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ।।
सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ।।
नानक सभु किछु आपे करता, आपि करावै सोई ।। ४०

साचे ही सुखु होई

सचे भगत सोहहि दरबारे सचो सचु बखाणे राम ।
घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ।।
आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ।
सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ।। ४१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मो कउ करि संतनकी धूरे : १० :

संत तुझी तनु संगति प्रान ।
सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव ।।
संत ची संगति संत कथा रसु संत प्रेम माझे दीजा देवादेव ।
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ।।
अउर इक मागउ भगत चिंतामणि। जणी लखावहु असंत पापी सणि ।
रविदास त्रणै जो जाणै सो जाणु । संत अनंतहि अंतरु नाहीं ।।[42]

गंध सुगंध निवासा

तुम चंदन हम इरंड बापुरे, संगि तुमारे बासा ।
नीच रूख ते ऊच भए हैं गंध सुगंध निवासा ।।
माधउ सत संगति सरनि तुम्हारी ।
हम अउगन तुम्ह उपकारी ।।
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ।
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ।
जाती ओछी पाती ओछी ओछा जनमु हमारा ।
राजाराम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ।।[43]

साध संगि माइआ तरै

तृसना बिरले ही की बुझी है ।
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ।
परै परै ही कउ लुझी है ।।
सुन्दर नारी अनिक परकारी परगृह बिकारी ।
बुरा भला नहीं सुझी है ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

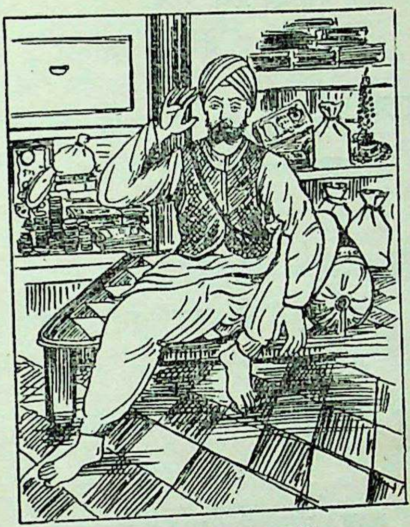

अनिक बंधन माइआ भरमतु,
भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ।
मन बिखै ही महि लुझी है ।।
जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै,
साध संगि माइआ तरै ।।
नानक सो जनु दरि हरि सिझी है ।। ४४

जब ते साधसंगति मोहि पाई
बिसरि गई सभ तात पराई ।
जब ते साधसंगति मोहि पाई ।।
ना को बैरी नहीं बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै
पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥[४५]

मो कउ करि संतनकी धूरे

अंतरजामी पुरख बिधाते
सरधा मन की पूरे ।
नानक दासु इहै सुख मागै
मो कउ करि संतन की धूरे ॥[४६]

दोसु न काहू दीजिये　　: ११ :

दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ।
जितु सेविऐ सुख होइ घना मन सोई गाईऐ ॥
कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ।
तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥
जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नहीं चारा ।
नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥
जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ।
सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥
चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ।
होहु कृपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥[४७]

इन ते आपि छडावहु

काम क्रोध लोभ झूठ निंदा, इन ते आपि छडावहु ।
इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी बिधि आपि जनावहु ।
हरिजन मंगल गावहु ।।
बिसरु नाही कबहू होए ते इह बिधि मनमहि पावहु ।
गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जन नानक कतहि न धावहु ।। ४८

प्रथमे छोडी पराई निंदा

प्रथमे छोडी पराई निंदा । उतरि गई सभ मनकी चिंदा ।।
लोभ मोह सभु कीनो दूरि । परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ।।
ऐसो तिआगी बिरला कोइ । हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ।।
अहं बुद्धि का छोडिया संगु । काम क्रोध का उतरिआ रंगु ।।
नाम धिआए हरि हरि हरे । साध जना कै संगि निसतरे ।।
बैरी मीत होए संमान । सरब महि पूरन भगवान ।।
मनि प्रगासु गुरते मति लई । कहु नानक ताकी पूरी पई ।। ४९

ते मूरति भगवाना

उसतति निंदा दोउ बिवरजित तजहु मान अभिमाना ।
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ।।
तेरा जलु एकु आधु कोई ।
कामु क्रोधु लोभु मोहु बिवरजित हरि पदु चीनै सोई ।।
तीरथ बरत नेम सुचि संजम, सदा रहै निहकामा ।
तृसना अरु माइआ भ्रमु चूका, चितवत आतम रामा ।।
जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ।
निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा, कहि कबीर जन दासा ।। ५०

निंदकका मैला आचारु

निंदक कउ फिटके संसारु । निंदक का झूठा बिउहारु ।।
निंदकका मैला आचारु । दास अपुने कउ राखनहारु ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निंदकु मुआ निंदक कै नालि । पारब्रह्म परमेसरि जन राखे ॥
निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥
निंदक का कहिआ कोइ न मानै । निंदक झूठ बोलि पछुताने ॥
हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि । निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥
हरिका दासु किछु बुरा न मागै । निंदक कउ लागै दुख सांगै ॥
बगुले जिउ रहिआ पंखै पसारि । मुख ते बोलिआ तां कढिआ बीचारि ॥

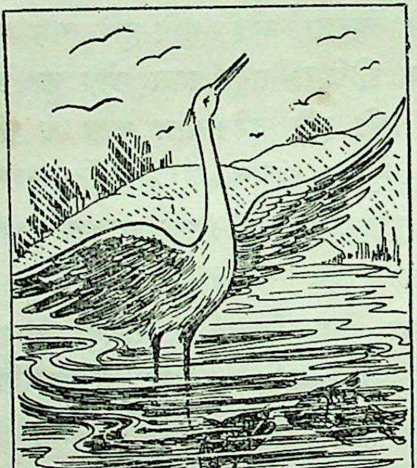

अंतरजामी करता सोइ । हरिजनु करै सु निहचलु होइ ॥
हरि का दासु साचा दरबारि । जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥५०

दुसट भाउ तजि निंद पराई

परदारा परधनु परलोभा, हउमै बिखै बिकार ।
दुसट भाउ तजि निंद पराई, कामु क्रोधु चंडार ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुख सुख दोऊ सम करि जानै, बुरा भला संसार ।
सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥
काइआ महलु मंदरु घरु हरि का
तिसु महि राखी जोति अपार ।
नानक गुरमुखि महलि बुलाइऐ
हरि मेले मेलणहार ॥[५१]

परहरु पर-निंदा

कामु क्रोधु परहरु पर-निंदा । लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला । हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥[५२]

हिन्दू तुरक दुहू महि एकै : १२ :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ।
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥
कारण करण करीम ।
किरपा धारि रहीम ॥
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ।
कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥
कोई पड़ै बेद कोई कतेब ।
कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥
कोई कहै तुरकु कोई कहै हिन्दू ।
कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदु ॥
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ।
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥[५३]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभ गुर पीर हमारे

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ।
हिंदू मूरति नाम निवासी, दुहु महि ततु न हेरा ॥
अलह राम जीवउ तेरे नाई, तू करि मिहरामति साई ॥
दखन देस हरी का बासा, पछिमि अलह मुकामा ।
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु, एही ठउर मुकामा ॥
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा, काजी मह रमजाना ।
गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥
कहा उडीसे मजनु कीआ, किआ मसीति सिरु नांएं ।
दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांएं ॥
एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ।
कबीर पूंगरा राम अलहका सभ गुर पीर हमारे ॥ ५४

एक नूर ते सभु जगु उपजिआ

अवलि अलह नूरु उपाइआ, कुदरति के सभ बंदे ।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ, कउन भले को मंदे ॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ।
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ सब ठाईं ॥
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजन हारै ।
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥
सभ महि सचा एको सोई तिसका कीआ सभु कछु होई ।
हुकमु पछानै सु एको जानै, बंदा कहीऐ सोई ॥
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुडु दीना मीठा ।
कहि कबीर मेरी संका नासी, सरब निरंजनु डीठा ॥ ५५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अलहु गैब सगल घट भीतरि

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ।
आपा देखि अवर नहि देखै, काहे कउ झख मारै ।।
काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा, सोचि बिचारि न देखै ।
खबरि न करहि दीनके बउरे ताते जनमु अलेखै ।।
साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ।
पढे गुने नाही कछु बउरे, जउ दिल महि खबरि न होई ।।
अलहु गैबु सगल घट भीतरि, हिरदै लेहु बिचारी ।
हिंदू तुरक दुहुं महि एकै, कहै कबीर पुकारी ।। ५६

हिन्दू तुरक कहाँ ते आए ?

हिंदू तुरक कहां ते आए, किनि एह राह चलाई ।
दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ।।
काजी ते कवन कतेब बखानी ।
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे, किनहूं खबरि न जानी ।। ५७

: १३ :

ताके निकट बसै नरहरी

जो नरु दुख महि दुखु नहीं मानै ।
सुख सनेहु अरु भै नही जाकै, कंचन माटी मानै ।
नह निंदिआ नह उसतति जाकै लोभु मोहु अभिमाना ।
हरख सोग ते रहै निआरउ, नाहि मान अपमाना ।।
आसा मनसा सगल तिआगै, जग ते रहै निरासा ।
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि, तिह घटि ब्रहमु निवासा ।।
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी, तिह इह जुगति पछानी ।
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ, जिउ पानी संगि पानी ।। ५८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ताके निकट बसै नरहरी

परधन परदारा परहरी । ता कै निकटि बसै नरहरी ॥
जिनकै भीतरि है अंतरा । जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥ ५९

सो जोगी मेरे मनि भावै

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ।
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥

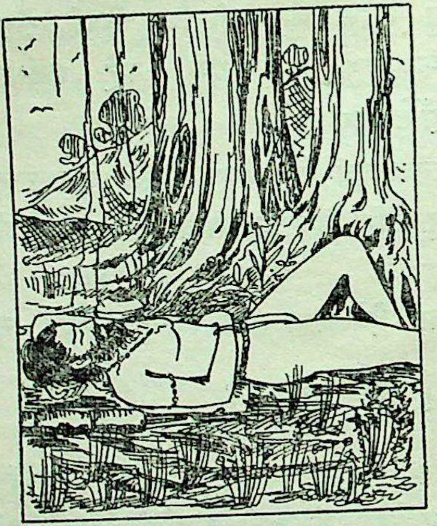

जोगी कउ कैसा डरु होइ ।
रूखि बिरखि गृहि बाहरि सोइ ॥
निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ।
अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥
सो जोगी मेरै मनि भावै ॥
कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जरा मरण गतु गरबु निवारे ।
आपि तरै पितरी निसतारे ॥ ६०

जो इसु मारे सोई सूरा

जो इसु मारे सोई सूरा । जो इसु मारे सोई पूरा ॥
जो इसु मारे तिसहि वडिआई । जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥
जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि । जो इसु मारे सो नामि समाहि ॥
जो इसु मारे तिसकी तृसना बुझै । जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥
जो इसु मारे सो धनवंता । जो इसु मारे सो पतिवंता ॥
जो इसु मारे सु जीवनमुकता । जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥
इसु मारी बिनु थाइ न परै । कोटि करम जाप ताप करै ॥
इसु मारी बिनु जनमु न मिटै । इसु मारी बिनु जम ते नहीं छुटै ॥
इसु मारी बिनु सभु किछु मइला । इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥
गुरि दुबिधा जाकी है मारी । कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥ ६१

भइयो मनु निरमलु

कास क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ।
सतु संतोख दइआ धरमु सचु इह अपुनै गृह भीतरि वारे ॥
जनम मरन चूके सभि भारे ।
मिलत संगि भइओ मनु निरमलु, गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ ६२

इन सिउ प्रीति निवारि

पर-धन पर-दारा पर-निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ।
चरण कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥
गृहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ।
जब लगु जीवहि कलीकाल महि, जन नानक नामु सम्हारि ॥ ६३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नामु न जपहिं ते आतमघाती : १४ :

दुलभ देह पाई बडभागी । नामु न जपहि ते आतमघाती ।।
मरि न जाही जिना बिसरत राम । नाम बिहून जीवन कउन काम ।।
खात पीत खेलत हसत बिसथार ।
कवन अरथ मिरतक सीगार ।

जो न सुनहि जसु परमानंदा ।
पसु पंखी तृगद जोनि ते मंदा ।।
कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ।
केवल नामु रिद माहि समाइआ ।। ६४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नामै ही ते सभु किछु होआ

नामै ही ते सभु किछु होआ ।
बिनु सतिगुर नामु न जापै ।
गुरका सबदु महा रसु मीठा ।
विनु चाखे सादु न जापै ।।
कउड़ी बदलै जनमु गवाइआ, चीनसि नाही आपै ।
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ।।
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउलिव लाई ।
सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ, सहजे रहिआ समाई ।। ६५

तव ते धावतु मनु तृपताइआ

संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ।
तब ते धावतु मनु तृपताइआ ।।
सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ।
स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ।। ६६

नाम रतु सो भगत परवानु

नामु भगत कै प्रान अधारू । नामो धनु नामो बिउहारू ।।
नाम वडाई जनु सोभा पाए । करि किरपा जिसु आपि दिवाए ।
नामु भगत कै सुख असथानु । नाम रतु सो भगत परवानु ।।
हरि का नामु जनक उधारै । सासि सासि जनु नामु समारै ।। ६७
कहु नानक जिसु पूरा भागु । नाम संगि ता का मनु लागु ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बिनु रघुनाथ सरनि काकी लीजै ? : १५ :

नाथ कछूअ न जानउ । मनु माइआ के हाथ बिकानउ ।।
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी । हम कहीअत कलिजुग के कामी ।।
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ । पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ।।
जत देखउ तत दुख की रासी । अजौ न पत्याइ निगम भए साखी ।।
इन दूतन खलु बधु करि मारिओ । बड़ो निलाजु अजहू नही हारिओ ।।
कहि रविदास कहा कैसे कीजै । बिनु रघुनाथ सरनि काकी लीजै ।। ६८

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ।
उतरि गइओ मेरे मनका संसा जबते दरसनु पाइआ ।।
अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ।
दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ।।
बाह पकरि कढि लीने अपुने गृह अंध कूप ते माइआ ।
कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ।। ६९

प्रभ बिरदु पछानहु

अब मैं कउनु उपाउ करउ ।
जिह बिधि मन को संसा चूकै भाउनिधि पार परउ ।
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरउ ।
मन बच क्रम हरिगुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ।।
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ।
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानहु तब हउ पतित तरउ ।। ७०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता

तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता । तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥
तूं मेरा राखा सभनी थाई । ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥
तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा । तूं मेरी ओट तूं है मेरा माणा ॥
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई । सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥
जीअ जंत सभि तुधु उपाए । जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥
सभ किछु कीता तेरा होवै । नाही किछु असाड़ा जीउ ॥
नामु धिआइ महा सुखु पाइआ । हरिगुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥
गुरि पूरै वजी बाधाई । नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥ ७१

तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ

तूं मेरा सखा तूं ही मेरा मीतु । तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥
तूं मेरी पति तू है मेरा गहणा । तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥
तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान । तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥
जिउ तुम राखहु तिव ही रहना । जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥
जह पेखउ तहा तुम बसना । निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥
तूं मेरी नवनिधि तूं भंडारू । रंग रसा तूं मनहि अधारू ॥
तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ । तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥
मन तन अंतरि तुही धिआइआ । मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥
सतिगुर ते दृड़िआ इकु एकै । नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥ ७२

बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी

जिसका दीआ पैनै खाइ । तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥
खसमु बिसारि आन कंमि लागहि । कउड़ी बदले रतन तिआगहि ॥
प्रभू तिआगि लागत अन लोभा । दासि सलामु करत कत सोभा ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंम्रित रसु खावहि खान पान। जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ।।
कहु नानक हम लूण हरामी । बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ।। ७३

प्रभके चरन मन माहि धिआनु

प्रभ के चरन मन माहि धिआनु । सगल तीरथ मजन इसनानु ।।
हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई । कोटि जनम की मलु लहि जाई ।।

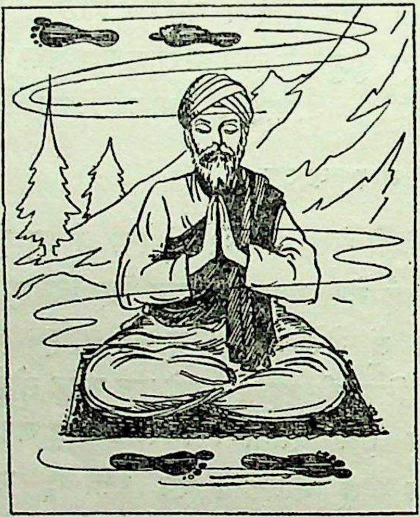

हरि की कथा रिद माहि बसाई । मन बांछत सगले फल पाई ।।
जीवन मरणु जनमु परवानु । जाकै रिदै बसै भगवानु ।।
क नक सेई जन पूरे । जिना परापति साधू धूरे ।। ७४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुरुग्रन्थ साहिबके पदोंका सन्दर्भ

[पृष्ठ ३९ से ७२ तक]

		पृष्ठ
१.	रागु गोंड, महला ५, चौपदे घरु २	८६४
२.	रागु गोंड, महला ५, चौपदे घरु २	८६४
३.	रागु गोंड, महला ५, चौपदे घरु २	८६४
४.	राग माझ, महला ५, चौपदे घरु १	९८
५.	राग माझ, महला ५, चौपदे घरु १	९९
६.	रागु माली गउड़ा, वाणी भगत नामदेव	९८८
७.	राग गोंड, वाणी नामदेवजीकी, घरु १	८७३
८.	राग धनासरी, महला ५	६७७
९.	रागु भैरव, महला ४, चौपदे घरु १	११३४
१०.	राग आसा, महला ४, सो पुरखु	११
११.	राग धनासरी, महला ९,	६८४
१२.	राग सारंग की वार, महला ४	१२३७
१३.	राग वसंतु, महला ९	११८६
१४.	राग गउड़ी, पूरबी १, कबीर	३३६–७
१५.	राग विलावलु, वाणी भगताकी, कबीरजीउकी	८५५
१६.	राग आसा, आसाकी वार, महला १, कबीर जीउ	४७७
१७.	रागु आसा, महला ५।४	१२
१८.	राग गउड़ी गुआरेरी, महला १।१८	१५६
१९.	राग टोडी, महला ५, घरु २, चौपदे	७१२
२०.	राग वडहंसु, महला ३, घरु १	५५८
२१.	राग सोरठि, महला ९	६३२
२२.	राग गडड़ी, भगतांकी वाणी, गडड़ी कबीरजी	३२९
२३.	राग गउड़ी गुआरेरी, महला ३	१५९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

		पृष्ठ
२४.	राग गउड़ी, महला ९,	२१९
२५.	राग आसा, कबीरजीउ के दुपदे	४८४
२६.	राग आसा, महला ५	३७२
२७.	राग गूजरी, स्री त्रिलोचनजी के पदे, घरु ३	५२५
२८.	राग आसा, कबीर जीउके दुपदे	४८५
२९.	बिलावलु, वाणी कबीर जीउकी	८५५
३०.	सुखमनी, महला ५	२५९
३१.	सुखमनी महला ५	२५९
३२.	गउड़ीकी वार, महला ४	३०७
३३.	बिभास प्रभाती, वाणी भगत कबीरजीकी	१३५०
३४.	सिरी रागु, महला १	५५
३५.	सिरी रागु, महला १	५५–५६
३६.	सिरी रागकी वार, महला ४	८३
३७.	राग वडहंसु, महला ३	५६४–५
३८.	राग सूही, महला ३, घरु ३	७६८
३९.	राग सूही, महला ३	७६९
४०.	राग सूही, महला ३	७६९
४१.	राग सूही, महला ३	७६९
४२.	आसा वाणी स्री रविदासजीउकी	४८६
४३.	आसा वाणी स्री रविदासजीउकी	४८६
४४.	राग गउड़ी, महला ५	२१३
४५.	राग कानड़ा, महला ५	१२९९
४६.	राग गउड़ी पूरबी, महला ५	१३
४७.	राग बिलावलु, महला ५	८०९
४८.	राग सोरठि, महला ५ घरु २	६१७
४९.	राग भैरउ, महला ५	११४७
५०.	राग भैरउ, महला ५	११५१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पृष्ठ

५१. राग मलार, महला १ १२५५
५२. राग मारु, महला १ १०४१
५३. राग रामकली, महला ५ ८८५
५४. विभासप्रभाती, वाणी भगत कबीरजीउकी १३४९
५५. विभास प्रभाती, वाणी कबीरजीउकी १३४९
५६. राग आसा, कबीरजीउ ४८३
५७. राग आसा, ,, ४७७
५८. राग सोरठि, महला ९ ६३३
५९. भैरउ, वाणी नामदेउजीकी घरु १ ११६३
६०. राग गउड़ी, महला १ २२३
६१. राग गउड़ी, महला ५ २३७
६२. राग आसा, महला ५ ३७९
६३. राग आसा, महला ५ ३७९
६४. राग गउड़ी, महला ५ १८८
६५. राग सूही, महला ३, घरु १ ७५३
६६. राग गउड़ी, महला ५ १८९
६७. राग गउड़ी, महला ५ १८९
६८. जैतसरी, वाणी भगताकी ७१०
६९. सारग, महला ५ १२१८
७०. धनासरी, महला ९ ६८५
७१. माझ, महला ५ १०३
७२. गउड़ी गुआरेरी, महला ५ १८१
७३. गउड़ी, महला ५ १९५
७४. गउड़ी, महला ५ १९५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्म क्या कहता है ?

लेखक : श्रीकृष्णदत्त भट्ट

धर्म मानव-जीवनकी आधार-शिला है। मानवके विकासमें, उसकी उन्नतिमें धर्मका बहुत बड़ा स्थान है। भिन्न-भिन्न धर्मोंके ऊपरी आचारोंमें हमें अन्तर दिखाई पड़ता है अवश्य, पर हम उनके भीतर घुसकर देखें, तो पता चलेगा कि सभी धर्मोंके हृदयसे एक ही त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है : सत्य, प्रेम और करुणाकी।

हमारी 'धर्म क्या कहता है ?'—पुस्तक-मालामें भिन्न-भिन्न धर्मोंका सरल और रोचक परिचय दिया गया है—हर स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्धके लिए आवश्यक, 'हितं मनोहारि' !

१. धर्मोंकी फुलवारी (सब धर्मोंकी सामान्य जानकारी)
२. वैदिक धर्म क्या कहता है ? (पहला भाग : वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्)
३. वैदिक धर्म क्या कहता है ? (दूसरा भाग : स्मृति, वाल्मीकि-रामायण, योगवाशिष्ठ, महाभारत, दर्शनशास्त्र)
४. वैदिक धर्म क्या कहता है ? (तीसरा भाग : गीता, पुराण, भागवत, तुलसी-रामायण)
५. जैन धर्म क्या कहता है ?
६. बौद्ध धर्म क्या कहता है ?
७. पारसी धर्म क्या कहता है ?
८. यहूदी धर्म क्या कहता है ?
९. ताओ और कनफ्यूश धर्म क्या कहता है ?
१०. ईसाई धर्म क्या कहता है ?
११. इस्लाम धर्म क्या कहता है ?
१२. सिख धर्म क्या कहता है ?

हर पुस्तककी पृष्ठ-संख्या लगभग ८० और मूल्य ६० नये पैसे।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

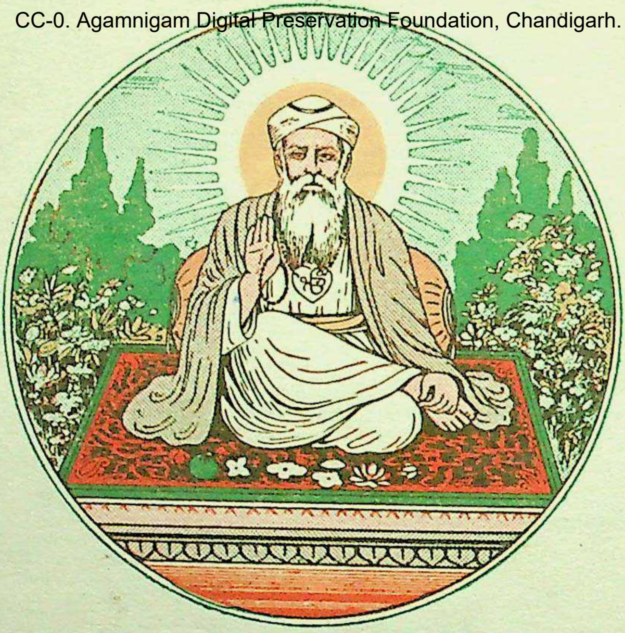

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।।

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ।।

आदि गुरुनानक —जपुजी २७

सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी